पहली चूक

श्रीलाल शुक्ल

लेखक परिचय – प्रसिद्ध व्यंग्यकार – कथाकार श्रीलाल शुक्ल का जन्म 31 दिसम्बर सन् 1925 ई. में लखनऊ के पास अतरौली नामक ग्राम में हुआ था। इनकी शिक्षा–दीक्षा लखनऊ और इलाहाबाद में हुई। सन् 1950 ई. में आप भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) के लिए चुने गए।

शुक्ल जी ने सन् 1955 ई. से साहित्य रचना आरम्भ की। उनका लेखन मुख्य रुप से व्यंग्य के लिए चर्चित हुआ। जासूसी और रहस्य-रोमांच के तत्वों का प्रयोग भी अपनी कुछ रचनाओं में किया है। श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित 'राग दरबारी' धारावाहिक दूरदर्शन पर बहुत लोकप्रिय हुआ। इनकी रचनाओं की भाषा जन–जीवन से जुड़ी हुई है। जिसमें हिन्दी, उर्दू के साथ–साथ अंग्रेजी के भी प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है। शुक्ल जी द्वारा साहित्य सृजन अभी भी निरंतर जारी है।

रचनाएँ – 'अंगद का पाँव', 'यहाँ से वहाँ', 'सूनी घाटी का सूरज', 'अज्ञातवास', 'सीमाएँ टूटती हैं', 'आदमी का जहर', 'मकान' और 'राग दरबारी' आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

केन्द्रीय भाव

'पहली चूक' व्यंग्य में लेखक ने उन शिक्षित जनों को अपनी रचना का केन्द्रबिन्दु बनाया है; जो शहर में निवास करते हैं और ग्रामीण वातावरण से पूर्णतः अनभिज्ञ होते हैं। ये पुस्तकों और चलचित्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर अपने मानस में काल्पनिक ग्राम का सृजन करते हैं। उनकी कल्पना उस समय खण्ड–विखण्ड हो जाती है, जब वे ग्रामीण परिवेश में पहुँचकर यथार्थ ग्राम्य–जीवन के दर्शन करते हैं।

लेखक ने सुख–सुविधापूर्ण शहरी वातावरण में रहकर ग्रामीण – समस्याओं को सुलझाने की असंगति को स्पष्ट किया है।

पहली चूक

''उत्तम खेती मध्यम बान,
अधम चाकरी भीख निदान।''

यह कहावत पहले मैं कई बार सुन चुका था। अब हुआ यह कि बी.ए. पास करने के बाद मुझे अधम चाकरी मिली ही नहीं। इसलिए उसे भीख निदान समझकर मैंने खेती के उत्तम व्यवसाय में हाथ लगाना चाहा और अपने गाँव चला आया।

मेरे चाचा ने मुझे समझाया कि खेती का काम है तो बड़ा उत्तम, पर फारसी पढ़कर जिस प्रकार तेल नहीं बेचा जा सकता, वैसे ही अंग्रेजी पढ़कर खेत नहीं जोता जा सकता। इस पर मैंने उन्हें बताया कि यह सब कुदरत का खेल है क्योंकि फारस में तेल बेचने वाले संस्कृत नहीं बोलते, खेत जोतते हैं।

चाचा बोले, ''बेटा यह खेती का पेशा तुमसे नहीं चलेगा। यह तो हम जैसे लोगों के लिए है। इसमें तो दिन–रात पानी और पसीना, मिट्टी और गोबर से खेलना पड़ता है।

इस पर मैंने जबाब दिया कि यह शरीर ही मिट्टी का बना हुआ है; और यह गोबर तो परम पवित्र वस्तु है। मिट्टी का स्थान यदि पंचभूतों में है तो गोबर का स्थान पंचगव्य में है।

मेरे मुँह से पवित्रता की बात सुनते ही चाचा दंग रह गए। आस-पास बैठे हुए लोगों में ''धन्य है, धन्य है'' का नारा लग गया। तब मैंने फिर कहना शुरू किया, ''और चाचा, यह खेती साधारण लोगों का पेशा नहीं है। बड़ों-बड़ों ने इसकी प्रशंसा की है। कार्लाइस ने इस पर लेख लिखे हैं, टॉलस्टाय तो स्वयं किसान ही हो गया था, वाल्टेयर खुद बागवानी करता था, ग्लैड्स्टन लकड़ी चीरता था। अपने देश में भी गौतम जैसे ऋषि गेहूँ बोते थे। वैसे तो कंद-मूल-फल खाने के कारण उनकी दिलचस्पी हॉर्टिकल्चर में थी और वे ज्यादातर फल और शकरकंद ही पैदा करते थे, इसलिए खेती को उत्तम मानना ही चाहिए। मैं कल से खेती करूँगा। मेरा यही फैसला है।''

मेरे चाचा मेरी बात से प्रभावित तो हुए पर बाले, ''बेटा, खेती करोगे पर इतना समझ लो कि खेतों के आस-पास न तो कॉफी हाउस होते हैं, न क्लब। सिनेमाघरों की गद्देदार कुर्सियों की जगह अरहर की ठूँठियों पर घूमना-फिरना होता है।''

यहाँ मैं आपको बता दूँ कि मुझे सिनेमा का बड़ा शौक है। वह इसलिए कि सिनेमा खेती की उन्नति का एक अच्छा साधन है। सिनेमा द्वारा खेती का बड़ा प्रचार हुआ है। बड़े-बड़े हीरो खेत जोतते जाते हैं, और गाते जाते हैं। हीरोइन खेत पर टोकरी में रोटी लेकर आती है। हरी-भरी फ़सल में आँखमिचौली का खेल होता है। फसल काटते समय हीरोइन के साथ बहुत-सी लड़कियाँ नाचती हैं और गाती भी हैं। वे नाचती जाती हैं; और फसल अपने आप कटती जाती है। ऐसे ही मधुर दृश्यों को देखकर, पढ़े-लिखे आदमी गाँवो में आने लगते हैं; और खेतों के चक्कर काटने लगते हैं। इस प्रकार सिनेमा द्वारा खेती की शिक्षा मिलती है। सच पूछिए तो खेती करने की सच्ची शिक्षा मुझे भी सिनेमा से ही मिली थी।

दूसरे दिन चाचा ने मुझसे खेतों पर जाकर काम करने के लिए कहा। मैंने पूछा, ''खेत कहाँ पर हैं।''

उन्होंने कहा, ''गाँव के दक्खिन की ओर, रमेसर के बाग के आगे से गलियारा जाता है। गलियारे से पश्चिम एक राह फूटती है। राह से उत्तर एक मेंड़ जाती है। मेंड़ के पूरब गन्ने का एक खेत है। गन्ने के खेत के पास बाजरा खड़ा है। वहीं अपने खेत जोते जा रहे हैं। तुम वहीं जाकर काम देखो।''

मैं चल पड़ा। कुँवार का महीना था। आसमान पर हल्के-हल्के बादल थे। ताड़ और खजूर के पेड़ हिल-हिलकर एक दूसरे के गले मिल रहे थे। सब कुछ सिनेमा-जैसा लग रहा था। तभी आगे एक कुआँ दीख पड़ा। सिनेमा में हीरोइन कुँए पर पानी भरती है और हीरो खेत की ओर जाते हुए उससे बातें करता है। कुआँ सुनसान था। किसी की पायल नहीं झनकी न कोई घड़ा फूटा। इसी तरह पूरा रास्ता कट गया। न खेतों में आँखमिचौनी का दृश्य दीख पड़ा न हीरो ने कोरस गाए। मुझे देहात से बडी निराशा हुई। मैं चुपचाप अपने रास्ते पर चलता गया।

अब मैं ऐसी जगह पहुँचा जहाँ मेरे खेत होने चाहिए थे। चाचा ने बताया था कि वहीं गन्ने का खेत है और वहीं बाजरा खड़ा है। मैं गन्ने के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। इसलिए बाजरे का सहारा लेना पड़ा। एक मेंड़ पर एक अधेड़ किसान खड़ा हुआ था। उसके पास जाकर अपना गाना बन्द करते हुए मैंने पूछा, ''आपका नाम बाजरा तो नहीं है ?''

किसान ने मेरी ओर घूरकर देखा, फिर घबराहट के साथ पूछा, ''यह आप पूछ क्या रहे हैं ? मेरा नाम तो रामचरन है।''

मैने रामचरन के कंधे पर हाथ रखकर सार्वभौमिक मित्रता के भाव से कहा, ''तो भाई रामचरन, मुझे बताओ यह बाजरा कौन है? कहाँ रहता है ? यह खड़ा कहाँ है ? इसे क्यों खड़ा किया गया है ?'' मेरी बात सुनते ही रामचरन जोर से हँसने लगा। आस-पास काम करते हुए किसानों को पुकारकर उसने कहा, ''यह देखो, ये भैया तो बाजरे को आदमी समझ रहे हैं।'' दो-तीन किसान हँसते हुए वहीं आ गए। मैं समझ गया कि मुझसे चूक हो गई। इसलिए बात पलटते हुए मैंने कहा, ''ओ, मैं तो हँसी कर रहा था। दरअसल मैं तो बाजरे के पेड़ की छाँह ढूँढ रहा हूँ। उसी पेड़ के पास मेरे चाचा के खेत हैं।''

इस बार वे किसान कुछ और जोर से हँसे। मुझे भी झेंप-सी लगी। पर मैंने हँसकर इस बात को टाल दिया।

दूसरे दिन से ही मुझे इस बात की चिन्ता हुई कि ऐसी चूक मुझसे कहीं दुबारा न हो जाए। इसलिए कृषि शास्त्र की मोटी-मोटी किताबें मँगवाकर मैंने उनका अध्ययन आरम्भ कर दिया। गाँव से मैं हताश हो गया था। वहाँ वह था ही नहीं जो मैंने रुपहले पर्दे पर देखा था। फिर भी मैं अध्ययन करता रहा। अध्ययन करते-करते मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि आदर्श खेती गाँव में हो ही नहीं सकती, वह शहर में ही होती है। यह सब इस प्रकार से हुआ।

मुझे बीज और खाद खरीदने के लिए बीजगोदाम जाना पड़ा। बीज गोदाम के कर्मचारी शहर गए हुए थे। इसलिए मैं भी शहर चला गया। दूसरे दिन मुझे अपने खेतों में अच्छे हलों से जुताई करानी थी। अच्छे हल शहर में मिलते हैं। इसलिए मैं फिर शहर पहुँचा। तीसरे दिन मुझ नहर में एक नया पाइप लगवाने की जरूरत जान पड़ी। उसके लिए नहर के बड़े इंजीनियर का हुक्म लेना पड़ता है। वे शहर में रहते हैं। इसलिए मैं फिर शहर गया। चौथे दिन कुछ कीटाणुनाशक दवाइयाँ खरीदने के लिए मुझे शहर का चक्कर लगाना पड़ा। फिर मुझे कृषि-विभाग के एक कर्मचारी की शिकायत करने के लिए शहर जाना पड़ा। उसके बाद मैं जितना ही खेती की समस्याओं को समझता गया उतना ही शहर जाने की आवश्यकता बढ़ती गई। इसलिए एक दिन मैंने कृषि-शास्त्र की सब किताबें एक बैग में बंद की और अपनी कार्डराय की पतलून और रंग-बिरंगी छापेदार बुश शर्ट पहनी, फेल्ट कैप लगाई और चाचा से कहा, ''देखिए यह खेती का काम ऐसा है कि बिना शहर गए इसे साधना कठिन है। इसलिए मै शहर जा रहा हूँ। वहीं रहूँगा और वहीं से वैज्ञानिक ढंग की खेती करूँगा।''

चाचा ने प्रसन्नतापूर्वक हँसकर कहा, ''जैसे खूँटे से छूटी हुई घोड़ी भूसे के ढेर पर मुँह मारती है, जैसे धूप में बँधी हुई भैंस तालाब की ओर दौड़ती है, वैसे ही तुम्हारा शहर की ओर जाना बड़ा स्वाभाविक और उचित है। मैं आदमी पहचानने में कभी चूक नहीं करता, पर तुम्हें पहचानने में ही मुझसे पहली चूक हुई। जाओ, शहर ही में रहकर खेती करो।''

मैंने भी प्रसन्न मुद्रा में कहा, ''नहीं चाचा। चूक आपसे नहीं हुई पहली चूक तो मुझी से हुई थी, जो मैंने बाजरे को पहले आदमी समझा और बाद में उसे छायादार पेड़ समझता रहा। पर कोई बात नहीं। अब मैं शहर में रहकर बाजरे के विषय में अपनी रिसर्च करूँगा; और बताऊँगा कि किस खाद के प्रयोग से बाजरे की लताओं में मीठे और बड़े बड़े फल लाए जा सकते हैं।''

इस प्रकार हम दोनों ने प्रसन्नतापूर्वक एक-दूसरे से विदा ली। मैं गुनगुनाता हुआ स्टेशन की ओर चल दिया और वे बैलों की पूँछ उमेठते हुए खेत की ओर चले गए।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. 'आपका नाम बाजरा तो नहीं है' - यह कथन किसने किससे पूछा ?
2. रामचरन ने किसानों को पुकारते हुए क्या कहा ?
3. लेखक ने भाषायी चूक से बचने के लिए कौन-कौन सी तैयारी की ?
4. लेखक को बीज-गोदाम क्यों जाना पड़ा ?
5. लेखक के अनुसार कंद-मूल-फल खाने के कारण ऋषियों की दिलचस्पी किस व्यवसाय में थी ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. चाचा ने लेखक को खेती के बारे में क्या समझाया ?
2. लेखक ने रामचरन के कंधे पर हाथ रखते हुए मित्र भाव से क्या-क्या प्रश्न किए ?
3. पंचभूत और पंचगव्य में क्या अंतर है?
4. ''शरीर ही मिट्टी का बना हुआ है'' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?
5. लेखक ने अंतिम बार शहर जाने का फैसला क्यों किया ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. ''पहली चूक'' पाठ का केन्द्रीय भाव लिखिए ?
2. 'सिनेमा से खेती की शिक्षा' पर लेखक के विचार लिखिए।
3. 'फारस में तेल बेचने वाले संस्कृत नहीं बोलते' इस कथन का भाव विस्तार कीजिए-

व्यंजन संधि-

ध्यान दीजिए -

1. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए -

अ) सिनेमा खेती की उन्नति का एक अच्छा साधन है।

ब) अच्छे संकल्प की सिद्धि में समय लगता है।

स) संतोष और संयम सज्जन व्यक्ति के गुण हैं।

उपरोक्त वाक्यों में आए उन्नति,संकल्प, संतोष, संयम और सज्जन भाषायी दृष्टि से व्यंजन संधि के अंतर्गत आते हैं। आपको स्मरण होगा कि **'दो स्वरों के आपस में मिलने से स्वर संधि, दो व्यंजनों अथवा व्यंजन-स्वर के परस्पर मिलने से व्यंजन संधि तथा विसर्ग का स्वर या व्यंजन से मेल होने पर विसर्ग संधि होती है।'**

'उन्नति' शब्द में व्यंजन से व्यंजन वर्ण का मेल हो रहा है-

उन्नति = उत् + नति = त् + न का न्न में परिवर्तन होता है। इसी तरह सज्जन = सत् + जन = त्+ज का ज्ज में परिवर्तन होता है।

अतः निश्चित ही यह संधि, व्यंजनों के मेल से उत्पन्न परिवर्तन को बता रही है। जितने भी शब्द हैं उनके संधि होने की स्थिति में प्रथम वर्ण व्यंजन होता है जैसे -

सत् + भावना = सद्भावना

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

नियमीकरण - व्यंजन संधि में परिवर्तन के अनेक नियम हैं। जैसे

1) वर्ग के प्रथम वर्ण का तृतीय वर्ण में परिवर्तन। जैसे-जगदीश = जगत् + ईश

2) वर्ग के प्रथम वर्ण का पंचमवर्ण में परिवर्तन - वाक्+मय = वाङ्मय
(इसमें क, च,ट,त,प, के बाद 'न' 'या' 'म' होने पर प्रथम वर्ण का रूपान्तरण पंचम वर्ण में हो जाता है। उदाहरण - क का ङ

3) त् सम्बन्धी विशेष नियम -
त या द के बाद च या छ हो तो त या द के स्थान पर च हो जाता है। यथा-
उत् + चारण = उच्चारण

4) त या द के बाद ज या झ हो तो त या द के स्थान पर ज हो जाता है। जैसे –

सत् + जन = सज्जन

5) 'म्' के बाद वर्ग का प्रथम वर्ण हो तो 'म्' के बदले विकल्प से अनुस्वार या उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है। यथा –

सम् + कल्प = संकल्प

सम् + तोष = संतोष

6) यदि किसी के पहले 'स' के पूर्व अ, आ को छोड़कर अन्य कोई स्वर आता है तो 'स' के स्थान पर ष हो जाता है। जैसे –

अभि + सेक = अभिषेक

व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

विसर्ग संधि निम्नांकित शब्द को अलग–अलग कर पढ़ने पर वर्णों के मेल का चमत्कार दिखाई देता है।

जैसे :–

दु : + आत्मा = : + आ= रा= दुरात्मा

विसर्ग (:) के पश्चात स्वर अथवा व्यंजन , आने पर विसर्ग में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

कुछ उदाहरण विसर्ग के इस प्रकार है

विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन

यशः +गान= यशोगान, मन : +ज = मनोज, मन : + हर = मनोहर,

सर : +वर= सरोवर

पुरः + हित = पुरोहित

नियम : –1

यदि 'अ' के बाद विसर्ग हो और आगे वर्गों के तृतीय , चतुर्थ, पंचम वर्ण अथवा य,र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

उपरोक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद ग, ज, ह, व , ह आया है अतः विसर्ग 'ओ' में परिवर्तित हो गया है।

विसर्ग का 'र' में परिवर्तन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

निः + आशा= निराशा, निः +धन= निर्धन, दुः+ आत्मा =दुरात्मा

दुः + गुण = दुर्गुण, निः + मल = निर्मल, दुः +घटना= दुर्घटना

इन उदाहरणों में हमने देखा – जब विसर्ग के पूर्व इ, उ आया है और विसर्ग के बाद आ, ग, म, घ, वर्ण आए हैं, तब विसर्ग के स्थान पर 'र' होता है।

नियम : – 2

यदि विसर्ग के पूर्व अ,आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए और बाद में किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण अथवा य, ल, व, द वर्ण आएँ तो विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाता है।

अब हम विसर्ग के श, स, ष में परिवर्तन को देखते हैं।

जैसे – निः + चल =निश्चल, दुः +चरित्र = दुश्चरित्र

निः + छल= निश्छल, निः + चय = निश्चय

उपर्युक्त उदाहरणों में विसर्ग के बाद च, अथवा छ आने पर विसर्ग का श् होता है।

नियम – 3

उदाहरण –

निः +प्राण= निष्प्राण, निः +कपट= निष्कपट

उपर्युक्त उदाहरण में विसर्ग के बाद प, फ अथवा क, ख आने पर विसर्ग के स्थान पर 'ष्' हो जाता है।

नियम – 4

अब हम विसर्ग के स्थान पर स् के उदाहरण देखते हैं।

नमः +कार= नमस्कार, निः + तार=निस्तार

निः +तार= निस्सार, नमः +ते= नमस्ते

नियम – 5

हमने देखा कि विसर्ग के बाद क, त, स आने पर विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

कुछ शब्दों के साथ विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

जैसे– अंतः + करण =अंत : करण, प्रातः +काल = प्रातः काल

पय : + पान= पयः पान, अध : +पतन= अधःपतन

प्रश्न– 1 निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करते हुए संधि का नाम बताइए –

वागीश, कीटाणु, ग्रन्थालय, महेश, उन्नति

प्रश्न– 2 निम्नलिखित वाक्यों में संकेत के अनुसार परिवर्तन कीजिए –

1. खेत के पूरब में गन्ने का एक खेत है। (प्रश्नवाचक वाक्य)
2. मैं खेती के बारे में अधिक जानता हूँ। (निषेधात्मक वाक्य)
3. यह आप क्यों पूछ रहे हो ? (विस्मयबोधक वाक्य)

योग्यता विस्तार

1. स्थानीय बोली के शब्दों की सूची तैयार कर उन्हें मानक भाषा में बदलिए।
2. शिक्षक के सहयोग से हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों के नाम संकलित कीजिए।
3. 'खेती का महत्व' विषय पर अपने विचार लिखकर कक्षा में सुनाइए ।
4. आपने खेत देखे होगें। खेतों में कब–कौन सी फसल उगाई जाती है किसान से मिलकर पता कीजिए तथा उसे लिपिबद्ध करिए।

शब्दार्थ

यथार्थ = वास्तविक। **कुदरत**=प्रकृति। **पंचभूत**=पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश,वायु (पंचतत्व)। **पंचगव्य**=दूध, दही, घृत, गोबर, गोमूत्र का मिश्रण। **आँख**=मिचौली–लुका–छिपी (बच्चों का एक खेल)। **गलियारा**=सँकरी गली। **कोरस**=समूहगान। **पतलून**=अंग्रेजी ढंग का पायजामा। **बान**=व्यवसाय, धंधा। **अधम**=निम्न, निचले स्तर का। **हार्टिकल्चर**=बागवानी। **सार्वभौमिक**=विश्वजनीन सब लोक की। **रिसर्च**=खोज, अनुसंधान।